पंचविध कार्यक्रम

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २८ अप्रैल, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सवाल — जवाब

चोर टिकट बाबू

सवाल — अीमानदार लोग बिना टिकट लिये सफर नहीं करते। अुनके लिअे बढ़ा हुअा किराया बोझ बनता जा रहा है। और जो बेअीमान लोग रेलवे कर्मचारीसे मिलकर कम पैसा देकर बगैर टिकटके चलते हैं, अुनसे होती हुअी नुकसानी भले लोगों पर बोझ बढ़ाकर वसूल की जाती है।

अिधर — बिहारमें — हम जब भी सफर करते हैं, जहां गाड़ी कुछ देर ठहरती है, वहां मैं रेलवे कर्मचारीको बराबर मुसाफिरोंसे पैसा लेकर बिना टिकट गाड़ीमें चढ़ाते देखता हूं। हमें अैसा मालूम होता है कि लाअिन भरमें अिसकी गुटबन्दी है। अेक बाबू पैसा ले रहा है तो दूसरा देख रहा है। अगर जांच करनेवाले अफसर ट्रेनमें आ रहे हैं तो सबको पहले ही खबर मिल जाती है, सब सतर्क हो जाते हैं। बादमें वही रवैया चलता रहता है।

अगर कोअी सज्जन गवाह बनकर पकड़वाना भी चाहते हैं, तो अितनी पैरवी, सिफारिश और कानूनका दावपेंच चलता है, जिसमें सादे भोले लोगोंको टिकना मुश्किल हो जाता है। अिसलिअे हम सोचते हैं कि क्या किया जाय?

जवाब — कोअी बुराअी अुसके पीछे पूरी शक्ति लगाये बिना नहीं हटाअी जा सकती। जगह-जगह पांच-सात आदमियोंको मिलकर कुछ सालके लिअे अिस बुराअीके पीछे ही कमर कसके लग जाना चाहिये। बहुत सालकी बात है जबकि बरारके अेक सज्जन डब्बेमें भीड़ कम करानेके हेतुसे अुसके पीछे लगे। डब्बा पूरा-पूरा भर गया है, खड़ा रहना भी मुश्किल है, फिर भी लोग आते ही रहते हैं, और स्टेशन-मास्टर और गार्ड वगैरा भी अुन्हें अन्दर ठूंसते रहते हैं, अैसा दृश्य हर किसीने देखा होगा। अिस सज्जनने जहां पर अैसा अनुभव आया कि तुरन्त सांकल खींचकर गाड़ीको ठहरानेका कार्यक्रम बना लिया। कअी बार अुन पर केस किये गये। परन्तु वे थके नहीं। केसमें वे जीत ही जाते। भीड़ कम करा करके ही वे साधारणतः गाड़ीको आगे बढ़ने देते। अिसमें जनताको भी रोष हो जाता था। जिन्हें अुतरना पड़ता वे रेलवे तंत्रके बजाय अिन्हें अपना दुश्मन मानते। फिर भी अैसी गलतफहमीको भी वे बरदाश्त कर लेते। आगे जाकर जब भी गार्डको मालूम हो जाता कि अुक्त सज्जन ट्रेनमें सफर कर रहे हैं, तो वह मौका सम्हाल लेता, और अुन्हें सांकल खींचनेका अवसर न आने देता। अुनके डब्बेमें अधिक भीड़ नहीं की जा सकती थी। धीरे धीरे अधिक डब्बे जोड़े जाने लगे। पिछली लड़ाअीके आरंभसे यह काम फिरसे बिगड़ा।

अगर २-३ अच्छी प्रतिष्ठा रखनेवाले स्त्री या पुरुष साथमें प्रवास करते हुअे टिकट बाबू और बगैर टिकट प्रवास करनेवाले लोगों पर चौकी करनेका काम शुरू कर दें, और जहां अिस तरहका लेन-देन और अप्रामाणिक व्यवहार देखनेमें आवे, तुरन्त ही वहां बाबू और प्रवासी दोनोंको अैसी चोरीसे बाज आनेके लिअे समझावें, और न मानने पर अूपरी अफसरके पास शिकायत करना आरंभ करें, तो अिस बुराअीको अंकुशमें लाया जा सकता है। अिन स्वयंसेवकोंको प्रारंभमें काफी विरोध सहन करना पड़ेगा। शायद पीटे भी जायं। अुन पर झूठे अिलजाम भी लगाये जायं। अूपरी अफसर अुनकी शिकायत पर ध्यान देना टालें। फिर भी न हारनेका निश्चय करके वे अिसके पीछे लगें तो सुधार हो सकता है। समाजका नीतिका स्तर अिसी तरह सुधारा जा सकता है। अिंग्लैंडमें अेक अेक बुराअी व रोग आदिको निर्मूल करनेके लिअे कअी भले लोगोंने अपना सारा जीवन कुरबान किया है। अिसके कारण अुनकी सामान्य जनताका भी नैतिक स्तर अन्य देशोंसे अूंचा पाया जाता है। हम अपने व्यक्तिगत कारबार संभालनेमें ही लगे हुअे रहते हैं। समाजकी भलाअी-की परवाह नहीं करते। जब हम समाजके लिअे कष्टसहन करना सीखेंगे तब हम सर्वोदयकी राह पर चढ़ सकेंगे। यही शुद्ध व्यवहारका आन्दोलन है।

वर्धा, १२-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

टिप्पणियां

श्री बालासाहब पंत

औंध स्टेटके राजासाहब श्री बालासाहब पंत ता० १३ अप्रैल शुक्रवारको ८४ वर्षकी अुम्रमें देहावसान पाये। औंध स्टेट अेक छोटा-सा राज था, जो बादमें बम्बअी राज्यमें सातारा जिलेमें मिला दिया गया है। हमारे देशके राजाओंमें वे बड़े धीरोदात्त राजा थे। अपनी जनताको पूर्ण अुत्तरदायी शासन देनेमें वे प्रथम थे। अुसका संविधान गांधीजीकी सलाहसे बनाया गया था। गांधीजीकी स्वराज्यकी जो कल्पना थी अुसका वह अेक नमूना था। राजासाहब प्रजावत्सल थे, जनताके सुखदुःखमें वे पिताके समान भाग लेते और राज्यके कारबारमें तथा तरक्कीमें वे बराबर मार्गदर्शन करते रहते थे।

अनेक विषयोंमें अुनकी दिलचस्पी थी। अुनकी सूर्यनमस्कारकी पद्धति मशहूर है। जनताके आरोग्य तथा शारीरिक विकासकी दृष्टिसे अुन्होंने सूर्यनमस्कारको अेक व्यायामके ढंग पर बढ़ाया था। वे अुसके प्रचारके लिअे काफी मेहनत लेते थे। संगीत तथा चित्रकामका भी अुन्हें बहुत शौक था। वे रामके परम भक्त थे। रामायणके साहित्यमें अुन्होंने संशोधन किया है, तथा अपने राज कारोबारमें रामायणकी भावनाको मूर्त रूप देनेकी वे भरसक कोशिश करते रहे। अुनका आवाज बुलंद था, तथा वे अेक अच्छे वक्ता थे। आज लाअुड स्पीकरके जमानेमें बुलंद आवाजकी जरूरत नहीं पड़ती, परन्तु तीस वर्षके पहले वह अेक अुपयोगी शक्ति थी।

वर्धा, १७-४-'५१
(गुजरातीसे)

बीजके मालिक

कुछ स्नेहियोंने मुझे नम्रसा अुलहना दिया है कि जब श्री मणिलाल गांधी वहां दुनियाकी अ-गौर जातियोंके प्रति हो रहे अत्याचारके खिलाफ प्राणकी बाजी लगा रहे हैं, अुस समय मेरा अपनी सामाजिक कमजोरियोंका अुल्लेख करना अुचित नहीं हुआ। श्री मणिलाल गांधी जिस आदर्शके लिअे लड़ रहे हैं, वह मेरा ही है। मेरा अुनसे आत्मीयताका सम्बन्ध है, और मेरे लिअे वे दक्षिण अफ्रीकाके अेक सार्वजनिक नेता या महात्मा गांधीके पुत्रसे कुछ ज्यादा हैं। मलान सरकारके खिलाफ अुनकी वीरतापूर्ण लड़ाअीसे मेरी पूरी सहानुभूति है, और मैं भी यह चाहता हूं कि हम यहां जो भी करें वह अुनकी मददके लिअे होना चाहिये। और अिसीलिअे मैं अपने देशवासियोंसे यह अनुरोध करता हूं कि हम अपने समाजसे अपनी कमजोरियोंका ज़हर धो डालें। देशके संविधानने हमारा रास्ता साफ कर दिया है और यदि हम अभी भी अुस पर नहीं चलते तो दोष हमारा ही है। हमें महसूस करना चाहिये कि हमारी भेदभावकी निंदनीय नीतिका कितना बुरा प्रभाव हमारे प्रवासी देशवासियों पर होता है। नीचे अखबारोंमें प्रकाशित अेक समाचार दिया जा रहा है जिससे प्रगट होगा कि परदेशमें हमारी जिन्दगीको जहरीला करनेवाला यह बीज हमारा ही भेजा हुआ है। ज्यादा दुःख यह देखकर होता है कि पृथक निर्वाचनकी यह मांग जिन मुसलमानोंने रखी है, अुनमें से अधिकांश भारतके निवासी हैं।

"नअी दिल्ली, मार्च-२१, '५१

"नैरोबीसे प्राप्त निजी समाचारोंसे जाना जाता है कि केनियाके भारतीय मुसलमानोंकी पृथक निर्वाचन-क्षेत्रों और वहांकी धारासभामें पृथक स्थानोंकी मांगका समर्थन अिस अुपनिवेशके यूरोपीय लोग कर रहे हैं।

"अैसा दीखता है कि अंग्रेजी शासन-कालमें यहां मुस्लिम लीग और अंग्रेज सरकारका जो गठबन्धन था, ब्रिटिश अुपनिवेशोंमें आज अुसीकी पुनरावृत्ति हो रही है।

"केनियाकी धारासभाकी रचनामें तबदीलियां होने जा रही हैं, और भारतके प्रवासी मुसलमान यह आग्रह कर रहे हैं कि अुन्हें पृथक प्रतिनिधित्व दिया जाय। मालूम होता है कि भारतीयोंको जो पांच सीटें दी गअी हैं अुनमें से दो मुसलमानोंको मिलनी चाहियें, मुसलमानोंकी अिस साम्प्रदायिक मांगके पीछे यूरोपियन लोग हैं।

"दूसरी तरफ यूरोपियन लोग केनिया धारासभाके कुल स्थानोंमें से आधे अपने लिअे चाहते हैं, यद्यपि अुनकी संख्या पूरी जनसंख्याका सिर्फ अेक प्रतिशत ही है। अुम्मीद की जाती है कि भारत सरकार अिस विषय पर ब्रिटिश सरकारसे बातचीत करेगी और केनियामें भारतवासियोंके लिअे पृथक निर्वाचन-क्षेत्रोंका विरोध करते हुअे सबके लिअे अेक ही मतदाता-सूची बनानेका आग्रह करेगी।" (ता० २२-३-'५१ के 'नेशनल हैराल्ड' से अुद्धृत)

वर्धा, १९-४-'५१ कि० घ० म०

गूजरात विद्यापीठके नये कुलपति

पूज्य गांधीजीके देहावसानके बाद विद्यापीठके कुलपति-पद पर सरदारश्री नियुक्त हुअे थे। अुनके स्वर्गवासके बाद विद्यापीठ मंडलने प्रस्ताव किया है कि अुस पद पर "डॉ० राजेन्द्रप्रसादकी नियुक्ति की जाती है और मंडल अुनसे प्रार्थना करता है कि वे अिस पदका स्वीकार करें।" अिस प्रस्तावके जवाबमें डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ता० १६-४-'५१ के अपने पत्रमें लिखते हैं :

"प्रिय मगनभाअी,

"आपका भेजा गूजरात विद्यापीठ मंडलका प्रस्ताव मिला। मैं विद्यापीठके कुलपति-पदको सहर्ष स्वीकार करता हूं। विद्यापीठ मंडलके सभी सदस्योंको मेरी ओरसे धन्यवाद दे देंगे।"

आपका,

(हस्ताक्षर) राजेन्द्रप्रसाद

यह बड़ी खुशीकी बात है कि गूजरात विद्यापीठ अपने कुलपतिके तौर पर डॉ० राजेन्द्रप्रसादको प्राप्त कर सका। मैं मानता हूं कि गुजरातके साथका अुनका यह विशेष संबंध सबको पसंद आयेगा।

ता० २०-४-'५१ म० देसाअी

(गुजरातीसे)

विद्यार्थी किस ओर?

यह समाचार मिला है कि अलीगढ़में अेक कालेजके आचार्यको कुछ विद्यार्थियोंने बुरी तरह पीटा और वे अुस मारपीटका शिकार हो गये। विद्यार्थियोंके अिस अत्याचारका कारण यह बताया जाता है कि आचार्यने परीक्षाके निरक्षककी हैसियतसे अेक दर्जन विद्यार्थियोंको परीक्षामें नाजायज तरीके अिस्तेमाल करनेके कारण परीक्षामें शामिल नहीं होने दिया था। हम यह मान लें कि आचार्यने बिलकुल बिला वजह और मनमाने ढंगसे या कुछ दूसरे ही कारणोंसे यह कार्रवाअी की हो, तो भी विद्यार्थियोंके अिस कार्यकी जितनी भी निन्दा की जाय कम है। अगर वे निर्दोष भी थे, तो अुनकी बादकी हरकत बतलाती है कि वे पदवीके लिअे अयोग्य थे। अगर कालेजके विद्यार्थी यह खयाल कर लें कि वे कायदेको अपने हाथमें ले सकते हैं, तो हम मामूली गुंडेको अिसी तरहके तरीके बरतने पर क्यों माफ न करें? सारे देशके विद्यार्थियोंको अिस कमीना हरकतकी काफी कड़ी निन्दा करनी चाहिये। विद्यार्थियोंके अपने मंडल हैं। अिन मंडलोंको चाहिये कि वे मिलकर विद्यार्थियोंके परीक्षा संबन्धी बरताव, अनुशासन तथा सहशिक्षा और विद्यार्थी-विद्यार्थिनियोंके आपसके संबंधके बारेमें शिष्टाचार और दूसरी अैसी ही बातोंके लिअे आचरणके सामान्य नियम बना लें।

किसी न किसी तरह परीक्षा पास कर लेनेके दयाजनक जोशके असरमें विद्यार्थियोंने अपनी अक्ल खो दी मालूम होती है। यहां कालेजके अध्यापकोंको भी कुछ कह देना जरूरी है। परीक्षक होना आर्थिक लाभकी वस्तु हो गअी है, जिसके लिअे अिनमें आपसमें नापाक होड़ जारी है। अिस तरहसे वे सब गंदे तरीके, जो व्यापारमें जारी हैं, अध्यापक वर्गमें भी पहुंच गये हैं। अिसके अलावा अध्यापक विद्यार्थियोंको, अगर अुनका बर्ताव अैसा न हो जैसा कि वे चाहते हैं, धमकी देते हैं कि परीक्षामें अिसका बुरा नतीजा होगा। अिस तरहसे विद्यार्थियोंकी सही शिकायतें भी दबा दी जाती हैं, और विद्यार्थी भयके कारण अपना नैतिक बल खो बैठते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अैसी चीजें अनुशासनके लिअे मददगार और अुपयोगी हैं। तरफदारी करना, परीक्षाओंमें जानबूझकर गलत अंक देना, रिश्वत, बेअीमानी, परचोंका फूटना आदि मामूली बातें हो गअी हैं। अिन सब चीजोंकी भी जांचकी जरूरत है।

यह अच्छा होगा कि शिक्षण संस्थायें अिन गहरी खराबियोंकी, जो अिनमें घर कर गअी हैं, जांच करें। बेहतर होगा कि अनुसंधानके कुछ विद्यार्थी परीक्षाओंके अिस असाधारण पहलूका अभ्यास करें जिसने आर्थिक खराबी और समाजके लिअे भय पैदा किया है।

१२-४-'५१ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

शिवरामपल्लीका वृत्तांत

सर्वोदय समाजका तीसरा वार्षिक अधिवेशन दक्षिणके मशहूर शहर हैदराबादके पास, अुससे पांच मील दूर शिवरामपल्लीमें अप्रैलकी ८वीं तारीखसे ११वीं तक हुआ। विनोबा अपनी तीन सौ मील लम्बी पैदल-यात्रा पूरी कर वहां अेक दिन पहले ही आ गये थे। सर्वोदय समाजके ४००० सदस्यों — या सेवकोंमें से (जिनमें १२० सेवक विदेशके हैं) सम्मेलनमें करीब ८०० हाजिर थे। सम्मेलन श्री काकासाहेब कालेलकरकी अध्यक्षतामें शुरू हुआ, लेकिन अुन्हें सम्मेलनकी समाप्तिके पहले ही अपने दूसरे कामोंकी वजहसे चले जाना पड़ा। तब अुनके बाद अध्यक्षपद श्री श्रीकृष्णदासजी जाजूने संभाला।

सम्मेलनका जीवन शिविर जैसा ही था। ४-१० पर तड़के ही पहली घंटी बजती और प्रतिनिधि अुठ बैठते। पांच बजे प्रार्थना होती और फिर नाश्ता। बादमें १॥ घंटे तक शरीरश्रम। अिसमें ९॥ बज जाते, और तब हम लोग चर्चाओंके लिअे अिकट्ठे हो जाते। ११ और २ के बीचमें भोजन, आराम, और निंजी काम होता। अिसके बाद आधा घंटा सामुदायिक सूत्र-यज्ञ होता। फिर तीन घंटे तक सम्मेलनकी बैठक चलती। शामकी प्रार्थना ६ बजे होती थी। हर दिन प्रार्थनाके अंतमें विनोबा प्रवचन करते थे। अुसके बाद शामका भोजन, बादमें अपने-अपने स्थान पर आपसी गोष्टियां, और फिर सब सो जाते।

पहला दिन सर्वोदय समाजके सेवकों द्वारा प्रासंगिक विषयोंकी सामान्य चर्चा और सूचनाओंके लिअे रखा गया था। वक्ता मन-चाहे विषय पर बोल सकते थे। हां, समयकी मर्यादा थी। अिस तरह कितनें ही विषयोंकी चर्चा हुअी; जमीनका बंटवारा, देशकी आर्थिक परिस्थिति, स्वावलम्बन, कार्यकर्त्ताओंका वेतन, शिक्षा, कुम्हार-काम, सूतांजली, हरिजन-प्रश्न, शान्ति-सेना, पशु-वध, सत्याग्रह, सरकारी नीतियां आदि। अुस दिनके दो प्रमुख व्याख्यान श्री विनोबा और श्री कुमारप्पाके थे। विनोबाने पांच रचनात्मक कामका पंचविध कार्यक्रम पेश किया: श्रमनिष्ठा, शान्ति-सेना, सूतांजली, भंगीकाम और शुद्ध व्यवहार। अुन्होंने कार्यकर्त्ताओंको अिस काममें वेगसे जुट जानेका आह्वान किया। श्री कुमारप्पाने बताया कि खेती-काम करनेके लिअे वे अेक गांवमें बसने जा रहे हैं। अपना अुद्देश्य समझाते हुअे अुन्होंने कहा कि वे वहां संयम-प्रधान जनतंत्रका प्रयोग करेंगे, जो कि चल रहे भोगपरायण जनतंत्रसे, जिसमें पैसेकी प्रमुखता हो गअी है, भिन्न होगा।

दूसरे दिन अन्नके सवालकी चर्चा होती रही। आरम्भ राष्ट्रीय आयोजन कमीशनके सदस्य श्री रा० कृ० पाटीलने किया। अुन्होंने कहा कि यद्यपि ठीक-ठीक आंकड़े प्राप्त नहीं हैं, तब भी अिसमें शंका नहीं है कि भारत पर्याप्त अनाज पैदा नहीं करता तथा हमें आजकी पेट-पूर्ति खेतीसे वैज्ञानिक खेतीकी तरफ गये बिना छुटकारा नहीं। अुन्होंने यह भी कहा कि आजका असली सवाल बंटवारे और नियंत्रणोंका नहीं है, अुत्पादनका ही है। अंतमें सर्वोदयके कार्यकर्त्ताओंमें अपना विश्वास जाहिर करते हुअे अुन्होंने कार्यकर्त्ताओंसे सरकारके अुत्पादन-प्रयत्नमें अपना सहयोग देने और अुसे सफल बनानेका निवेदन किया। अिसके बाद अिस विषय पर और अनेक सदस्योंने अपने विचार प्रगट किये। श्री विनोबाने परिस्थितिका मुकाबला करनेके लिअे तीन निश्चित सूचनाअें कीं: १. खेतिहर मजदूरोंको मजदूरीका अेक अंश अनाजके रूपमें दिया जाय, २. लगान अनाजमें वसूल किया जाय, ३. हरअेक गांवमें घर-घर खादी-अुत्पादनको अुत्तेजन दिया जाय।

अनाजके बाद शुद्ध व्यवहार आन्दोलनकी चर्चा हुअी। यह विषय जनताके सामने हरिजन पत्रोंके द्वारा हालमें ही रखा गया है। यह चर्चा लगातार कुछ समयके लिअे तीसरे दिन तक होती रही। १० वीं तारीखको दूसरे विषयों पर चर्चा हुअी; जैसे प्रादेशिक स्वावलम्बन, आर्थिक समानता, नयी तालीम, और राजनीतिके प्रति सेवकोंकी दृष्टि। आखिरी विषय पर काफी विवाद होता रहा और चौथे दिनका सुबह अुसमें ही लग गया। चौथे यानी अन्तिम दिनकी शामको जिन विषयोंकी चर्चा होती रही, वे अिस तरह थे, शरीर-श्रमकी ही पूंजीसे संस्थाओंका संचालन, स्त्री-जातिकी अुन्नति, सत्याग्रहका स्थान, हरिजन-सेवा, और शान्ति-सेनाका रूप क्या हो।

विनोबाके चार प्रार्थना-प्रवचन सम्मेलनके महत्त्वके कार्योंमें से थे। पहले दिन अुन्होंने रचनात्मक काममें प्रार्थनाका क्या स्थान है, यह बताया, और अहंकारके नाशके लिअे संदाचारके दूसरे नियमोंकी तुलनामें अुसके महत्त्वका अुल्लेख किया। दूसरे दिनके भाषणमें अुन्होंने बताया कि हम जनतामें खादीके प्रचारमें अक्षम्य विलम्ब कर रहे हैं। न तो हम व्यापारिक खादीका ही प्रचार कर पाये हैं और न स्वावलम्बी खादीका। अुन्होंने कार्यकर्त्ताओंको चेतावनी दी कि खेती, समग्र ग्रामसेवा और सुधरे साधनोंके मोहमें कहीं हम चरखेका असली संदेश न भूल जायें। चरखेमें ही गांधीजीका असाधारण बड़प्पन प्रगट हुआ था; और हमारी क्रांतिका चिन्ह भी वही था। अुन्होंने कहा कि हमें अिस विषय पर गांधीजी जो कह गये हैं, अुसका गहरा अभ्यास करना चाहिये।

अपने १० अप्रैलके प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने जवाहरलालजीके अुस संदेशका अुल्लेख किया जो कि अुन्होंने सम्मेलनको भेजा था। संदेशमें पण्डितजीने कहा था कि रोशनी आज धीमी हो गयी है और अुसकी तलाशमें देशकी निगाहें सर्वोदयकी ओर लगी हुअी हैं। विनोबाने कहा कि भारत हजारों वर्षसे समताका आदर्श (सब जीव अेक ही हैं) हासिल करनेके लिअे, दयाका धर्मकी तरह पालन करता आया है। लेकिन अब हम समझ रहे हैं कि सच्चा धर्म यथार्थ समानताकी स्थापनामें ही है जिसमें दयाका निषेध नहीं होगा, क्योंकि वह दया-दानसे ज्यादा बड़ी चीज होगी। अुन्होंने श्रोताओंसे समताका आचरण करनेका आग्रह किया। अुन्होंने यह भी कहा कि दूसरे कामोंकी तरह समताके आचरणमें भी विवेकका योग होना चाहिये, नहीं तो बादमें हजारों वर्ष विवेक सीखनेके लिअे देने पड़ेंगे।

अपने अन्तिम प्रवचनमें अुन्होंने सम्मेलनके सारे कामकाजका संक्षेपमें सार बतलाया। अपने पहले भाषणमें वे जो कुछ कह चुके थे अुससे अधिक कुछ अुन्हें नहीं कहना था। अपने कामका सार अुन्होंने अेक श्लोकार्धमें पेश किया: 'अन्तःशुद्धिः, बहिःशुद्धिः, श्रमः, शान्तिः, समर्पणम्'। अुन्होंने शिक्षाके महत्त्व पर भी जोर दिया और कार्यकर्त्ताओंको सलाह दी कि वे अपने विचार दूसरों पर लादनेके लिअे अधीर न हों। कार्यकर्ताओंको चाहिये कि वे शिक्षाके द्वारा ही सुधारोंका प्रचार करें, जनताको सलाह दें, समझायें, और फिर अुसे अपना कार्यक्रम और जीवन-पद्धति ग्रहण करनेके लिअे स्वतंत्र छोड़ दें। जनतामें सच्ची और स्थायी ताकत पैदा करनेका यह अेक ही मार्ग है।

स्वागत-समितिने ग्रामोद्योगोंकी अेक छोटीसी प्रदर्शनीका आयोजन भी किया था। सम्मेलनकी अेक और विशेषता यह थी कि देशके विभिन्न प्रांतोंसे आये हुअे कार्यकर्ताओंकी टुकड़ियां अलग-अलग विनोबासे मिलीं और अुनके सामने अपनी कठिनाअियां पेश कीं। हरअेक टुकड़ीको अेक घंटेका समय दिया गया था। और कुल आठ टुकड़ियां अिस तरह मिलने आयीं। अिन छोटी-छोटी टुकड़ियोंकी बातचीत बहुत फलप्रद, प्रेरक और बोधक रही।

सम्मेलनमें हम लोगोंने कोअी प्रस्ताव तो पास किया नहीं। लेकिन हमने कोअी निश्चय भी नहीं किया, यह कहना गलत होगा।

सच तो यह है कि सम्मेलनने हमें अगले सालके लिअे अेक निश्चित कार्यक्रम दे दिया है। और अब यह हम पर है कि हम अुसे बुद्धिपूर्वक पूरा करें और अगले वर्ष जब फिर मिलें, तो जो कुछ हमने किया हो, अुसका हिसाब दें।

फिलहाल अैसा निर्णय हुआ है कि आगामी सम्मेलन सेवाग्राममें सन् '५२की फरवरीके आखिरी सप्ताहमें हो। आशा है कि हम लोग जो अपेक्षा हमसे की गयी है अुसे पूरी करनेमें कामयाब होंगे।

वर्धा, १३-४-'५१ **सुरेश रामभाअी**

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

२८ अप्रैल १९५१

पंचविध कार्यक्रम

सर्वोदय सम्मेलन, शिवरामपल्लीके दो विवरण अिस अंकमें जा रहे हैं। अुनसे और सम्मेलनमें भाग लेकर आये हुअे कुछ और भाअियोंने जो सुनाया, अुससे अैसा मालूम होता है कि विनोबा और रचनात्मक कामके दूसरे नेताओंने जनताके सामने कामका अेक पंचविध कार्यक्रम पेश किया है। विनोबाने अुसे अपनी सूत्रशैलीमें अेक श्लोकार्धमें अिस तरह संक्षिप्त किया है:

"अन्तःशुद्धिः, बहिःशुद्धिः, श्रमः, शान्तिः, समर्पणम्।"

(भीतरी शुद्धि, बाहरी शुद्धि, श्रम, शान्ति, और समर्पण।)

१. अन्तःशुद्धिः वही चीज है जिसे दूसरे शब्दोंमें हमने शुद्ध व्यवहार आन्दोलन कहा है। अन्तःशुद्धि अुसका अपने अंदर होनेवाला परिणाम है और शुद्ध व्यवहार या प्रामाणिक जीवन बाह्य जगतमें दिखनेवाला परिणाम। अुसमें लोगोंको यह आदेश है कि वे धन कमाने या सुख-सुविधाओंकी प्राप्तिके लिअे अशुद्ध अुपायोंका अवलम्बन न करें, और अिस हेतुकी सिद्धिके लिअे मिलकर सामूहिक ढंगसे काम करें। देशमें आज जीवनकी अनेक आवश्यक वस्तुओंकी काफी तंगी है। जिनके पास अुनका भंडार है, वे अिस तंगीका फायदा अुठाकर, अिन चीजोंकी अुचितसे अधिक कीमत वसूल करना चाहते हैं। अुनका हेतु, दूसरेके कष्टकी परवाह किये बिना, भरसक जल्दी और आसानीसे हो सके अुतना पैसा कमाना है। यह व्यवहार अेकदम समाज-विरोधी और स्वार्थी है। अिसके सिवा जिनके पास पैसा है, वे दूसरोंके पहले ही अपने आरामकी व्यवस्था कर लेनेके लिअे अुचितसे ज्यादा दाम देकर चीजें खरीदते हैं; अिस तरह वे अपने फाजिल पैसेका लाभ अुठाते हैं और गरीबोंको अुनके अिस कामसे जो तकलीफ होती है, अुसका बिलकुल विचार नहीं करते। यह भी स्वार्थी और समाज-विरोधी व्यवहार है। अैसी हालतमें किसी भी तरह सर्वोदय नहीं हो सकता। नियंत्रण हों या न हों, अिस परिस्थितिके रहते मनकी शांति और सुख सम्भव ही नहीं है। अिसमें कोअी प्रगति नहीं हो सकती, योजनाअें बनती रहें, अुनका अमल नहीं हो सकता, शांति और व्यवस्था या वैयक्तिक अथवा देशकी स्वतंत्रताकी रक्षा भी अिसमें नहीं हो सकती। विज्ञान कुदरती हृदय और फेफड़ोंकी जगह कृत्रिम हृदय और फेफड़ोंकी रचना शायद कर दे, पर प्रामाणिक जीवन और समाजधर्मकी भावनाके बिना ही जीवन सुखमय हो जाय, अैसा कोअी अुपाय कहीं कोअी नहीं कर सकता। अिसलिअे यह जरूरी और अनिवार्य है कि हम संकल्पपूर्वक शुद्ध व्यवहारके पालनकी पूरी कोशिश करें। यह कोशिश वैयक्तिक और सामूहिक दोनों तरहकी होनी चाहिये। दूसरोंकी आवश्यकताओं और सार्वजनिक हितकी चिंता करना भी हमें सीख लेना चाहिये। साथ ही हमें शुद्ध व्यवहारके पालन और अन्याय तथा असत्का प्रतिकार करनेमें अेक-दूसरेका सहयोग करना चाहिये और बल पहुंचाना चाहिये।

२. बहिःशुद्धिः सर्वोदयका स्वच्छताका कार्यक्रम है। हम लोगोंमें वैयक्तिक स्वच्छताका बहुत आग्रह है, अैसी हमारी कीर्ति है। हमें प्रतिदिन स्नान करने, मुंह-हाथ धोने, साफ धुले हुअे कपड़े पहिननेकी आदत है। लेकिन यह भी सब लोगोंमें नहीं पायी जाती, और अुसका भी विकास अेक सीमा तक ही हुआ है, पूरा-पूरा नहीं। सार्वजनिक सफाअी और स्वच्छताका बोध तो वैयक्तिक स्वच्छताकी जिनकी प्रतिष्ठा है, अुन लोगोंमें भी अभी-अभी अंकुरित होने लगा है। सामान्य जनतामें अुसकी दृष्टि बहुत ही कम है और मुख्यतः यही कारण है कि देशमें बार-बार महामारियां सिर अुठाती रहती हैं, बहुतसे रोग भी अुसीके फल हैं। हमारे समाजमें बालमृत्युकी बड़ी तादाद, शारीरिक निर्बलता, अकाल बुढ़ापा, और अल्पायु आदिके लिअे भी यही चीज जिम्मेदार है। सर्वोदयके निर्माणमें हमारी दूसरी बड़ी आवश्यकता वैयक्तिक और सामुदायिक जीवनमें बहिःशुद्धिके लिअे अेक सतत कार्यक्रमकी है।

३. श्रमः सर्वोदयकी तीसरी बड़ी शर्त है। अपनी तथाकथित शिक्षासे हमने जो सभ्यता पायी है अुसने हमें अीसपकी कहानियोंके अुस हरिण जैसा बना दिया है जिसे अपने बड़े-बड़े शाखायित सींगोंका तो गर्व था, पर जिसे अपनी पतली टांगोंकी शरम लगती थी। अपने प्राण बचानेके लिअे यद्यपि ये टांगें ही अुसकी सहायक थीं लेकिन अुसे लगता था कि वे अुसके सुरूप देहका कलंक है। नतीजा यह हुआ कि यद्यपि अुसकी अिन विनम्र और स्वामिभक्त टांगोंने अुसे बचानेकी बड़ी कोशिश की, तब भी अुसके भव्य सींगोंने अुसे अेक झाड़ीमें अुलझा ही दिया और शिकारी कुत्तोंने आकर अुसे चीर डाला। हमने भी अिस तरह सदियों तक श्रमकी प्रतिष्ठा और अुसकी अुपयोगिताके नाशकी पूरी कोशिश की है; और जो लोग कड़ी मेहनत करके, हमारे लिअे, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, जीवनकी सारी सुविधाअें, अन्न, वस्त्र, मकान, और साज-सामानकी वस्तुअें देते रहे हैं, अुनकी हमने न सिर्फ अुपेक्षा की है, बल्कि अुन्हें दबाया है और अपमानित किया है। जो हमारे कपड़े धोते हैं, बरतन मांजते हैं, गोशालाअें और गलियां झाड़ते हैं, टट्टियां साफ करते हैं, कपड़े, बरतन और जूते बनाते हैं, वे ही प्रतिष्ठाकी सबसे निचली सीढ़ी पर ढकेले गये हैं। हम अुन्हें अनादरकी दृष्टिसे देखते हैं, अुनके साथ अुद्दंडतासे पेश आते हैं, समाजमें अुन्हें अपमानित करते हैं। मन्दिरों तकमें, जहां कि हम और वे दोनों सिरजनहारकी पूजाके लिअे अिकट्ठे होते हैं, या तो अुन्हें कोअी स्थान नहीं दिया जाता, या बड़ी दूरी पर रखा जाता है। धन, सत्ता, और पोथी-पाण्डित्यको ही सारा सम्मान दिया जाता है। परिणामतः अुत्पादन घटा है, वैभव और विलासकी ओछी प्रवृत्ति बढ़ी है, और अगरचे मेहनत कोअी नहीं करना चाहता, हरअेक आदमी अुन सुविधाओंको हासिल करनेकी अिच्छा करता है जो कड़ी मेहनतसे ही पैदा होती हैं। यह कैसे सम्भव है? हम चाहे अपने खुले हाथों परिश्रम करें, या यंत्रों और औजारोंकी मदद लें, मेहनत तो हमें करना ही चाहिये। श्रमकी अिच्छा और क्षमताको संस्कृत मन और विकसित शरीरका लक्षण मानना चाहिये।

अिस कार्यक्रमका अमल कअी तरहसे हो सकता है। अन्न, फल और भाजियां, दूध और घी, गुड़, तेल, कपड़े आदि हम पैदा करना चाहते हैं। घर, स्कूल, नालियां, टट्टियां, सड़कें और पुल

बनाना चाहते हैं। अिन कामोंके लिअे अींट, गारा, अिमारती लकड़ी आदिकी जरूरत महसूस करते हैं। कुअें, नेहरें और जलाशय आदिका निर्माण करना चाहते हैं। हम अन्नके लिअे अपनी जमीनका मुंह जोहते हैं, और जमीन खादके लिअे हमारा मुंह ताकती है। तो हमें जमीनको खाद देना चाहिये। अिस तरह अनेक काम हैं, और अिनमें से हरअेक काम शरीरश्रमकी अपेक्षा करता है। यदि श्रमके साथ औजारोंकी मदद मिलती है, तो वह मदद हम खुशीसे लें, लेकिन औजार न हों तब निरुपाय न हों, हमारे हाथ ही, यदि हमारा संकल्प सच्चा है, तो काफी पैदा कर सकते हैं। औजारों और यांत्रिक साधनोंका तिरस्कार हमें नहीं करना है, पर पहले हाथोंको काममें जुट जाना चाहिये। यह है श्रम-निष्ठा।

४. **शान्ति:** हमारे कार्यक्रमका चौथा अंग है। यहां शान्ति शब्दका प्रयोग युद्ध-निवारणके संकुचित अर्थमें नहीं है। युद्धका निवारण तो करना ही है, लेकिन आखिर युद्ध हम छोटे-छोटे दल बनाकर जिन छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते रहते हैं, अुनकी ही अेक बड़ी आवृत्ति है। यदि ये छोटे-छोटे समुदाय शान्तिपूर्वक रहना, अपने छोटे झगड़े आपसमें निपटाना, और अपनी छोटी दुनियासे भय और द्वेष वर्जन करना सीख लें, तो बड़ी दुनियामें हो रहे बड़े युद्धोंकी जड़ ही कट जाय।

शान्तिका काम अैसा नहीं जिसे हमें प्रसंगवश अुस विशेष अवसर पर ही करना है जिसे 'शान्ति-भंग' कहते हैं। स्थानीय जनताके हर वर्गसे सजीव और गहरा सद्भाव निर्माण करना, और कठिनाअीमें पड़े हर प्राणीकी सेवा नित्य-प्रति करते रहना ही वह काम है। प्रतिदिन अपने आश्रितोंकी कुशल-खबर लेने जानेवाले डॉक्टर, नर्स, सफाअी-निरीक्षक, न्यायाधीश और सेठ आदि सभीके काम अेकसाथ करनेवाले आदमीसे हम शान्ति-सेवककी तुलना कर सकते हैं। शान्तिका सैनिक हर संकट-ग्रस्त व्यक्तिका स्वाभाविक मित्र है।

५. **समर्पण:** अिस कार्यक्रमका अन्तिम अंग है। यानी गांधीजीकी वार्षिक तिथि पर अपनी हाथ-कती सूत-मालाकी भेंट। अगर यह सूत-माला किसीने अपने हाथों नहीं काती है, तो समर्पणका अुद्देश्य पूरा नहीं होता। अपने हाथ-कते सूतकी अिस छोटी मालाकी महिमा छोटी नहीं है। वह अंजलि देनेवालेकी गांधीजीके प्रति भक्ति, सर्वोदय आदर्शमें श्रद्धा, सेवा-भावना, श्रम-निष्ठा अहिंसक और शोषणहीन समाज-व्यवस्था तथा अमीर और गरीबकी समानतामें विश्वासकी द्योतक है। अुससे यह भी प्रगट होगा कि सर्वोदय सेवकने जनतामें कितना काम किया है। आगामी सर्वोदय मेलेमें ज्यादासे ज्यादा आदमी अिस आयोजनमें भाग लें और अपने हाथ-कते सूतकी गुंडी भेंट करें, अिसकी पूरी कोशिश हमें करना चाहिये।

वर्धा, १७-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०

महादेवभाअीका पूर्वचरित

ले० — नरहरि परीख

अनु० — रामनारायण चौधरी

कीमत ०—१४-० डाकखर्च ०-३-०

रामनाम

लेखक: **गांधीजी**

संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद—९

आबूरोडका दंगा

कुछ दिन हुअे आबूरोडमें अेक दंगा हुआ था। अुसमें पुलिसने गोलियां चलायीं और लोगोंको सताया अैसा समाचार देनेवाली कअी पत्रिकाअें मुझे मिली थीं। श्री मोरारजीभाअीने अिस प्रकरणमें जांच करनेका और यदि पुलिसने ज्यादती की हो, तो अुन पर कार्रवाअी की जायेगी अैसा आश्वासन दिया है। श्री बालासाहब खेर स्वयं अभी वहां जाकर आये हैं। वे दोनों राज्यको शोभास्पद न्यायप्रियता बतायेंगे अैसा मुझे विश्वास है।

श्री संतबालजीने भी अिस प्रकरणमें गहरी पूछताछ करके अपना निष्कर्ष निकाला है। वह ता० १६-४-'५१ के 'विश्व-वात्सल्य' नामके अुनके गुजराती पाक्षिकमें प्रकट हुआ है।

अिस प्रकरणमें मुझे मिली पत्रिकाओंसे मेरे दिल पर जो असर पड़ा वह और श्री संतबालजीकी राय अेक समान है, अिसलिअे अुनके शब्द ही यहां अुद्धृत करता हूं:

> "यह बात सच है कि यह झगड़ा कपड़ा और शक्करको निमित्त बनाकर हुआ। परन्तु समुदायको अुत्तेजित करनेके लिअे यह शायद बहाना ही मिल गया हो। मुमकिन है कि अिसके पीछे आम जनताके असंतोषका गैर-तरीकोंसे लाभ अुठानेवाले राजकीय पक्ष रहे हों। तीन वर्ष पहले मोरबी (सौराष्ट्र)में मुझे अैसा ही अेक कटु अनुभव हो चुका था। 'मारवाड़ी सब चोर हैं' अैसा वाक्य किसी प्रांत-अफसर बोला हो, अैसा अधिकृत समाचार नहीं है। परन्तु वह बात सच भी हो तब भी अैसे अधिकारीकी अर्थी निकालकर कचहरीके पास जाहिर तौर पर जलानेका काम जनता किसीके द्वारा प्रोत्साहित किये बिना नहीं कर सकती। डी० अेस० पी० को चोट लगने पर भी अुन्होंने पुलिस स्टाफको रोक रखा, यह प्रसंग अुस अधिकारीकी खामोशीका सूचक है। परन्तु १४४वीं धाराकी सूचना करने गयी हुअी पुलिस पार्टीमें से कुछ सिपाहियोंने जो बर्ताव किया वह किसी तरहसे सहन करने योग्य नहीं है। अुन सिपाहियोंने ब्रिटिश हुकूमतके जमानेका अनुसरण करके वर्तमान सरकारको तथा स्थानिक अधिकारियोंको शरमिन्दा बनाया है। और जिन प्रत्याघाती बलोंके हाथमें जनता खेल रही थी, अुनके दोषको ढांककर अुन्हें ज्यादा प्रपंच फैलानेके लिअे तथा राष्ट्रहानिके मार्गको सरल कर देनेका जाने-अनजाने मौका दे दिया है। अैसे नये दाखिल हुअे प्रदेश पर बारीक निगाह रखकर जनताके मानसको सच्ची दिशामें ले जानेका काम सरकारी तंत्र तथा कांग्रेस-जन नहीं कर सके हैं। अिसीका यह भयंकर प्रत्याघात है अैसा मानना चाहिये। अिन दोषोंका भार किसी अेक व्यक्ति पर, तंत्र पर या किसी पक्षके सिर चढ़ाना अुचित नहीं। आजाद भारतकी जनताको अब सम्हलकर चलना चाहिये। क्योंकि जनताका अज्ञान, भोलापन या क्षुद्र स्वार्थवृत्तिका दुरुपयोग किस तरह किया जाता है, अिसका यह अेक दुःखद अुदाहरण है। प्रत्याघाती तत्त्वोंको या अच्छे हेतु परन्तु बुरे साधन द्वारा बुरे आदमियोंके साथ काम करनेवाले कार्यकरोंको भी अिस दुःखद प्रसंगसे बोध लेना चाहिये। बम्बअी सरकारने अिसकी जांच करनेका कार्य तुरन्त शुरू किया यह अच्छा ही किया है। अुस जांच परसे क्या सत्य निकलता है देखना होगा। परन्तु हमारे बहुतसे प्रकारके गुप्त पापोंका यह सामूहिक तथा भयंकर नतीजा समझना चाहिये। हमें पुलिसको मर्यादासे ज्यादा सत्ता देनेसे रुक जाना चाहिये। जिनमें प्रांतीयता और जातिवाद न हो, तथा जिनमें प्रेमभावना और मानवताके गुण हों अैसे लोगोंकी पुलिसमें भरती करें तथा राजकीय तथा बिनराजकीय

मतभेदोंका निपटारा सुयोग्य मार्गोंसे करना अब भी सीखें तो कितना अच्छा हो!"

वर्धा, २१-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(गुजरातीसे)

बार-बार लगाये जानेवाले टीके

स्वास्थ्य अधिकारीके सुझाव पर बम्बअीकी म्युनिसिपल स्टेंडिंग कमेटीने १७ जनवरी १९५१ को यह निर्णय किया है कि म्युनिसिपल स्कूलोंमें पढ़नेवाले बच्चोंको हर तीन साल बाद चेचकका टीका और हर साल टायफाअिडका टीका लगाया जाय। मैं कमेटीके अिस निर्णयका विरोध करता हूं। यह बड़े दुःखकी बात है कि बम्बअी म्युनिसिपल स्टेंडिंग कमेटीके किसी भी सदस्यको यह जानकारी नहीं थी, न किसीमें स्वास्थ्य अधिकारीसे यह सवाल करनेकी हिम्मत थी कि ब्रिटेनके लाखों बच्चे पिछले ४० बरसोंमें चेचकका टीका न लगानेके बावजूद भी जो चेचकसे सर्वथा मुक्त रहे हैं, अुसका अुनके पास क्या जवाब है। कमेटीके निर्णयमें यह कहा गया है कि टीका लगानेके लिअे बच्चोंके माता-पिताकी अिजाजत ले ली जायगी। लेकिन अमलमें अिससे अुलटा ही होगा। जब राजी करनेमें सफलता नहीं मिलेगी, तो म्युनिसिपल स्कूलोंमें पढ़नेवाले बच्चोंके गरीब भोले-भाले माता-पिता पर निश्चित रूपसे दबाव डाला जायगा। लेकिन बार-बार टीका लगानेका विचार ही अत्याचारपूर्ण है। जहरीले लसोंका टीका लगाकर बच्चोंके स्वास्थ्यकी रक्षा नहीं की जा सकती। सही बात तो यह होगी कि गरीब बच्चोंको पौष्टिक खुराक दी जाय और गांधीजीकी 'आरोग्यकी कुंजी' और 'आरोग्य-पथप्रदर्शक' नामक पुस्तकोंके आधार पर स्वच्छ जीवन बितानेकी शिक्षा दी जाय। केवल स्वच्छताने ही अिंग्लैंड और अमेरिकामें प्लेग, चेचक, टायफाअिड, क्षय, हैजा, डिप्थेरिया आदि रोग मिटा दिये हैं। अखबारोंमें अकसर अैसे क्रोधभरे पत्र पढ़नेको मिलते हैं, जिनमें पत्रलेखकोंकी कड़े शब्दोंमें यह शिकायत होती है कि बम्बअीकी जिन सड़कों पर वे रहते हैं, वे निहायत गन्दी और कूड़े-करकटसे भरी होती हैं। अिसलिअे चेचक और टायफाअिडके टीकोंका सहारा लेनेके बजाय, स्वास्थ्य अधिकारी और स्वास्थ्य मंत्री (डॉ० गिल्डर) को अिन गन्दी सड़कोंकी सफाअीका काम हाथमें लेना चाहिये। मेक्सिको, अिटली, जापान और पुर्तगाल, जो गरीब और गन्दे देश हैं और जहां हर तीन साल बाद चेचकका टीका लाजमी तौर पर लेना ही होता है, बार-बार चेचकके भयंकर रोगके शिकार होते हैं। अिसलिअे बम्बअी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके कांग्रेसी सदस्योंसे मेरा निवेदन है कि जब कार्पोरेशनके सामने स्वास्थ्य अधिकारीकी म्युनिसिपल स्कूलोंके बच्चोंको हर तीन साल बाद चेचकका टीका लगानेकी योजना पेश की जाय, तब वे अुसके लिअे अपनी स्वीकृति न दें।

सोराबजी मिस्त्री

[नोट: लेखकने चेचकके टीकेके बारेमें जो मत प्रगट किया है, अुससे मैं सहमत हूं। लेकिन जिन लोगों पर अिस निर्णयका असर होगा, वे जब तक अिस बारेमें कुछ करनेको तैयार न हों, तब तक कोअी सुधार संभव नहीं है। अगर माता-पिता चेचकका टीका अपने बच्चोंको न लगवाना चाहें, तो अुसका विरोध करना कठिन नहीं है। लेकिन वे ही झुकनेको तैयार हों, तब तो अुनकी मदद कौन कर सकता है? टीकेका विरोध करनेवाले संघों वगैराके लिअे यह जरूरी है कि वे लोकमतको शिक्षित बनायें, माता-पिता द्वारा अधिकारियोंको लिखवायें कि वे अपने बच्चोंको चेचक या टायफाअिडका टीका नहीं लगवाना चाहते और अगर माता-पिताके लेखी नोटिस पर अधिकारी ध्यान न दें तो अैसे संघ अुनके खिलाफ कार्रवाअी करें। साथ ही अिन संघोंको घरों, सड़कों वगैराका कूड़ा-करकट और गन्दगी ठीक ढंगसे साफ करानेका आन्दोलन भी करना चाहिये। अगर हमारा देश स्वच्छ और स्वास्थ्यप्रद जीवन नहीं बिताता और पौष्टिक तथा संतुलित खुराक नहीं ले सकता, तो वह महामारियोंकी सजासे या बदलेमें चेचक, टायफाअिड वगैराके टीकोंकी हलकी, कम असरकारक और हानिकारक सजासे बच नहीं सकता। यह समझना चाहिये कि जब तक लोगोंका सहयोग न मिले, तब तक कोअी सरकार या कोअी भी म्युनिसिपैलिटी आदर्श सफाअी और स्वास्थ्यप्रद स्थिति कायम नहीं रख सकती। यह सहयोग हम नहीं देते। अिसलिअे अधिकारीवर्ग टीकोंके अधूरे और जल्दी असर करनेवाले अुपाय काममें लेनेके लिअे मजबूर हो जाते हैं।

वर्धा, ३०-१-'५१ —कि० घ० म०]

(अंग्रेजीसे)

शिवरामपल्लीकी प्रेरणामूर्तियां

सर्वोदय समाजका शिवरामपल्ली अधिवेशन खूब सफल हुआ, अैसा निस्संकोच कहा जा सकता है। मुझे तो अैसा लगता है कि वह राअू और अनगूलके सम्मेलनोंसे भी बढ़कर हुआ। सब सेवक, जो वहां गये थे, वहांसे संतोष लेकर ही वापस हुअे होंगे। अधिवेशनके पहले वातावरणमें जो निराशा और खीझ थी, अुसकी जगह अुन्हें निश्चय ही सफलता और आशाका अनुभव आया होगा।

विनोबा

अधिवेशन पर विनोबाके व्यक्तित्वके प्रभावकी छाप ही सबसे ज्यादा थी, और आयोजनकी सफलताका अधिकांश श्रेय भी अुनको ही है। वर्धासे शिवरामपल्ली तक अुनकी ३०० मील लम्बी व्रजयात्राने देशभरमें सर्वोदय समाजके सदस्योंको सजगता दी, और अनेक सेवक तो संभवतः अुन्हें सुनने और अुनके सम्पर्कका सुख अनुभव करनेके लिअे ही शिवरामपल्ली गये।

जैसा कि सब जानते हैं, विनोबा आजकल पवनारमें अपने आश्रममें अेक बड़ा प्रयोग कर रहे हैं। वे पैसेका अुपयोग कमसे कम कर देना चाहते हैं, हो सके तो अुसका छेद ही कर देना चाहते हैं। अुनका कहना है कि दुनियामें सबसे ज्यादा गड़बड़ पैसेके ही विनिमयका अेक मात्र माध्यम बन जानेसे हुअी है। वे अपने आश्रममें अपने कुछ साथियोंके साथ बिलकुल ही प्राथमिक औजारोंकी मददसे भूमिका अुत्पादन बढ़ानेमें मग्न थे। अिस प्रयोगमें भूमिको जोतनेके लिअे या पानी देनेके लिअे बैलोंकी भी मदद नहीं ली जाती। वे देखना चाहते हैं आजकी परिस्थितिमें खेतीमें, जब कि पम्प, यंत्र और ट्रेक्टर ही खेतीके वैज्ञानिक साधन माने जा रहे हैं, शरीर-मेहनतसे कितना क्या किया जा सकता है। अपने अिस अत्यंत मूलगामी और क्रांतिकारी प्रयोग पर विनोबा अितने अेकाग्र हैं कि वे परंधाम छोड़कर सर्वोदय सम्मेलनमें जानेके लिअे भी राजी नहीं थे, यद्यपि वह अुनकी ही रचना है। यह याद रहे कि सर्वोदय समाजकी कल्पना गांधीजीकी हत्याके बाद सेवाग्रामके सम्मेलनमें विनोबाने ही दी थी। कल्पना यह थी कि अिस समाजकी कोअी नियमबद्ध संघटना नहीं होगी, वह अेक विदेह सत्ता होगी जिसमें नियम-प्रेरित अनुशासन नामकी चीजका कोअी स्थान नहीं होगा। अुनका आग्रह था कि समाजके सामान्य वातावरणमें गांधी-विचारका व्यक्ति-निरपेक्ष सार ही प्रगट हो, और हर आदमीकी अपनी सद्बुद्धि ही अुसकी प्रगतिका मार्गदर्शन करे। अस्तु, शिवरामपल्ली जानेके लिअे मित्रोंने विनोबासे कितना साग्रह अनुरोध किया, अिसका वर्णन यहां अलग आ ही चुका है। पाठक यह भी जानते हैं कि अिस अनुरोधके फलस्वरूप ही किस तरह अन्तमें अुन्होंने शिवरामपल्ली तक पैदल यात्रा करनेका निर्णय किया। विनोबामें कितने ही गुणोंके दर्शन अेक साथ होते हैं; अुनमें वैज्ञानिककी सूझ और प्रतिभा है, गणितज्ञकी चौकस बुद्धि, पण्डितका गहरा ज्ञान और संन्यासीका वह वीर्यवान अुत्साह है जिसकी प्रेरणासे वे अैसी हर चीजका त्याग अनायास कर देते हैं जो अुनके अुद्देश्यके लिअे

स्वाभाविक नहीं है या फाजिल है। अिसीलिअे तो गांधीजीने दूसरे महायुद्धके विषम कालमें अपने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलनके लिअे प्रथम सत्याग्रहीकी तरह अुन्हें ही चुना था।

विनोबाके व्यक्तित्व पर अधिक कुछ कहना यहां प्रासंगिक नहीं होगा, यद्यपि जो महत्त्वपूर्ण प्रयोग आजकल वे कर रहे हैं, अुसका खुलासा करनेके लिअे बहुत कुछ कहा जा सकता है। तब भी शिवरामपल्लीमें अुन्होंने जो संदेश दिया, अुसका मर्म और महत्त्व ग्रहण करनेके लिअे अुनके खेतीके अेकदम मूलगामी प्रयोगकी भूमिका हृदयंगम कर लेना जरूरी है। सभा-सम्मेलनोंमें अपने भाषणोंमें वे शरीर-श्रमकी महिमाका गान अकसर करते रहे हैं। शिवराम-पल्लीमें अुन्होंने हर अवसर पर जिस चीजका प्रतिपादन किया, वह है श्रमकी पवित्रता और अुसके द्वारा रचनात्मक कामको अेक नयी दिशामें प्रेरित करना। विनोबाके अनुसार शरीर-श्रमकी पवित्रता और वर्तमान सभ्य जीवनके सब मूल्योंका अिस मूल्यके प्रकाशमें पुनर्मूल्यांकन ही हमारी सारी कठिनाअियों और कष्टोंका अिलाज है। यदि हम पैसेके चलनका सहारा छोड़ दें, और नयी निष्ठा, अुत्साह और पवित्रताकी भावनासे शरीर-श्रमका अंगीकार करें तो दुनियाका चेहरा ही बदल जाय। आजका युग हमारे पास यही आमंत्रण लेकर आया है कि यह नया आदर्श लेकर निरन्तर अुत्पादन बढ़ानेमें लग जाओ। विनोबाने बार-बार अिस बात पर जोर दिया कि यदि हम अपने हाथोंका पूरा-पूरा अुपयोग करें, तो बिलकुल ही साधारण औजारोंसे हम अपनी सारी आवश्यकताअें आसानीसे पूरी कर सकेंगे। शरीर-श्रमको हम अिस नयी दृष्टिसे देखें तो यथा-क्रम हम सब पायेंगे, शोषणहीन व्यवस्था, विकेन्द्रीकृत समाज, सादगी, आर्थिक समता, और जीवनका पवित्र सौन्दर्य आदि।

श्रमके अिस नये मूल्यको हमें किस तरह धार्मिक भावनाके साथ ग्रहण करना है, विनोबा अपनी प्रार्थना-सभाओंमें भी यही समझाते रहे। गीता अनासक्तिका अुपदेश करती है, और देशमें गीताका विनोबा जैसा श्रेष्ठ पण्डित, जो सतत गीताकी शिक्षाको अपने व्यक्तिगत जीवनमें अुतारनेकी कोशिशमें लगा है, शायद ही दूसरा हो। अनासक्तिकी अिस धार्मिक भावनासे जिसने शरीर-श्रमका अंगीकार किया है, विनोबा अैसे व्यक्तिका प्रेरक अुदाहरण हैं।

सर्वोदय समाजके अैसे सेवकोंको जो तात्कालिक फलके लिअे अेकदम अधीर नहीं हो गये हैं, अवश्य ही शिवरामपल्लीमें विनोबाके अिन प्रवचनोंसे बहुत सन्तोष हुआ होगा। विनोबाके अिन समाधानोंमें वही रोशनी मिलती है जो क्षितिजके चमकते हुअे दूरवर्ती पर मार्ग-दर्शक नक्षत्रोंमें मिलती है। वे रास्ता तो दिखाते हैं पर यात्रीके धैर्यकी परीक्षा भी लेते हैं। तात्कालिक परिणामोंके लिअे जो व्याकुल हैं, अैसे लोग वहां थे और शायद अुनकी ही संख्या ज्यादा थी। राजनीतिमें आजकल बड़ी अव्यवस्था है, और अपनी अिन सारी अड़चनोंके निराकरणके लिअे हमें कोअी राह नहीं सूझती, अिस हालत पर अनेकोंका मन विचलित था। अुन्हें हर जगह सरकारके खिलाफ असंतोष फैलता नजर आता था। और वे यह देखते थे कि देशकी प्रमुख राजनीतिक संस्था कांग्रेस निराशा और खीझके अिस बढ़ते हुअे ज्वारको रोक नहीं पा रही है। जनता अन्न, वस्त्र और घरकी पुकार कर रही है, और कोअी नेता, दल या संस्था अैसी नहीं जो अिसमें से निकलनेका रास्ता दिखाये। और वे सवाल करते थे कि क्या सर्वोदय समाज अिन सवालोंका तात्कालिक समाधान दे सकता है। समाजका अिन सब सवालोंके प्रति क्या रुख है? आगामी चुनावोंमें सदस्य अपना मत किसे दें? संक्षेपमें कांग्रेसकी राजनीति और वर्तमान सरकारके प्रति सेवकोंका क्या रुख हो? सर्वोदय सम्मेलनमें आये हुअे अनेक भाअियोंके मनमें ये सवाल घूम रहे थे।

अिन सारी कठिनाअियोंका विनोबाने अेक ही हल दिया, "काम करो, अपने दोनों हाथ काममें जुटा दो, अूपर भगवानका सहारा और मनमें आत्मविश्वास लेकर काम करते जाओ और तब परिणामकी बाट जोहो।"

कुछ मुख्य विषयोंके प्रवक्ताओंको छोड़कर बाकी सब व्याख्याताओंको तीनसे पांच मिनट ही दिये गये थे। अितना समय बहुत लोगोंको बहुत ही कम मालूम हुआ, लेकिन कोअी अुपाय नहीं था। सम्मेलन चार दिन तक होता रहा, और समय तेजीसे बीत गया। सारा कार्यक्रम बहुत ही भरा हुआ था।

शंकरराव देव

श्री शंकरराव देवने, जिन्हें राजनीतिक कामका दीर्घ अनुभव है, सारी प्रासंगिक भूमिकाका हवाला देते हुअे प्रश्नका बहुत योग्य समाधान किया, और जिन सवालोंको लेकर लोग अिस बेचैनीका अनुभव कर रहे थे, अुनका स्वल्पकालिक हल पेश करनेकी कोशिश की। शंकरराव देव आमंत्रण मिलने पर भी कांग्रेसकी कार्यसमितिकी बैठकमें नहीं गये थे, और अधिवेशनके शुरू दिनसे ही वहां हाजिर थे। अिससे जाहिर होता है कि सर्वोदय समाज और सर्व-सेवा-संघकी चर्चाओंकी वे कितनी कद्र करते हैं। अुन्होंने सलाह दी कि हम मतदाताओंसे सम्बन्ध बनायें जिन पर सारी राजनीति निर्भर करती है और अुन्हें सही परामर्श देनेका काम करें। सरकार और राजनीतिक दलोंके पास पहुंचनेके बजाय यदि हम सद्भाव लेकर मतदाताओंके ही पास जायं तो ज्यादा लाभ होगा। सर्वोदय समाजके सेवकोंको चुनावोंमें अुम्मीदवार होनेकी अिच्छा नहीं करना चाहिये, अुन्हें तो चुनावोंको सही दिशामें मोड़ने और प्रभावित करनेके काममें ही अपनी ताकत लगानी चाहिये। यह सलाह सर्वोदय समाजकी नैतिक कल्पनाके अनुकूल थी और अुसे पेश करते हुअे श्री देवने अुसकी पृष्ठभूमि समझानेके लिअे सर्वोदय समाजका आरम्भसे आज तकका अितिहास भी बताया। सर्वोदय समाजका काम मतदाताओं पर तैयार राजनीतिक हल लादना नहीं है, बल्कि गांधीजीसे समाजके सेवकोंने जो प्रकाश पाया है, अुसके अनुसार अुन्हें जनताको अपनी कठिनाअियोंके हलका अहिंसक मार्ग सुझाना है। अुन्होंने कहा कि लोकसेवक संघ गांधीजीकी अन्तिम वसीयत थी, और अुनकी अूंची शिक्षाके प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करनेके लिअे सेवकोंको चाहिये कि वे अपनेको लोकसेवक संघका सदस्य मानकर चलें और चुनावोंकी अुम्मीदवारीके चक्करमें न पड़ें। कह सकते हैं कि अिस सवाल पर श्री शंकरराव देवके विचारोंका अुपस्थित लोगोंके मन पर ठीक प्रभाव हुआ।

दादा धर्माधिकारी

दादा धर्माधिकारीने श्री शंकरराव देवके अिस विचारसे सहमति प्रगट की कि समाजके सेवकोंको चुनावोंकी राजनीतिमें सक्रिय भाग लेनेके फेरमें नहीं पड़ना चाहिये। अुन्होंने अपना अनुभव बताया और राजनीतिक असफलताका प्रगट अिकरार किया। राजनीति आजकल कितनी गंदी हो गयी है, अिसका वर्णन भी अुन्होंने किया। राजनीतिमें तो संख्याका बल ही सब कुछ है, वहां गुणका, अीमानदारी और नीति-धर्मके पालनका कोअी खयाल नहीं है। दादाके व्याख्यान सदाकी तरह खूब प्रभावशाली थे।

जे० सी० कुमारप्पा

श्री कुमारप्पाको, खेद है कि, ज्यादा समय नहीं था। अुन्हें अेक आवश्यक बुलावा आ गया था, और वे जल्दी ही वहांसे रवाना हो गये। लेकिन अिस थोड़े समयमें ही अुन्होंने रचनात्मक कामका रूप और दिशा बदलनेकी आवश्यकता पर जोर दिया। अुन्होंने खेतीकी स्वयंपूर्णता सिद्ध करनेका महत्त्व बताया। बड़ी खूबीके साथ अुन्होंने शिथिल और भोगपरायण तथा संयत और

निग्रहपरायण जनतंत्रका फर्क समझाया। और सेवकोंको भारतीय संस्कृतिकी श्रेष्ठ परम्पराका पालन करते हुअे, अपनी आवश्यकताओंका नियंत्रण करते रहनेकी सलाह दी। अुन्होंने कहा कि हमें पश्चिमके भोगपरायण जनतंत्रकी नकल नहीं करना है; वहां तो लोगोंने अपनी आवश्यकताओंको बेहिसाब बढ़ा ली हैं।

काका कालेलकर

काका कालेलकर दो दिन तक अधिवेशनके अध्यक्ष थे, और जाते हुअे अुन्होंने सदस्योंका ध्यान वर्गहीन जनतंत्रकी स्थापनाकी ओर खींचा। जब तक जाति और वर्णका कुछ भी अवशेष बाकी है, तब तक न तो वर्गहीन समाजकी स्थापना हो सकती है और न आर्थिक समानता या न्यायका ही अमल किया जा सकता है। लोगोंको जाति, सम्प्रदाय और वर्णसे अूपर अुठना सिखाना है।

श्रीकृष्णदास जाजू

काकासाहेबके जानेके बाद अध्यक्षका आसन श्री जाजूजीने लिया। जाजूजीसे गांधी-स्मारक-निधिके विनियोग और कामके बारेमें फैली हुअी गलतफहमी दूर करनेकी प्रार्थना की गयी थी। अुन्होंने साफ शब्दोंमें बताया कि किसी भी तरहकी गलतफहमीका कोअी अुचित कारण नहीं है, और यद्यपि कामका आरम्भ करनेमें कुछ देर हुअी है, लेकिन अब तो काम भी वेगसे शरू हो गया है।

रा० कृ० पाटील

श्री रा० कृ० पाटील सम्मेलनमें हर साल हाजिर रहते हैं। शिवरामपल्लीमें अुनसे अन्नके विवादास्पद सवाल पर बोलनेके लिअे कहा गया। श्री पाटीलके भाषणमें सरकार और जनता, दोनोंकी दृष्टियोंका सुमेल सामंजस्य था। स्थिरतापूर्वक और अधिकार तथा साहसके साथ अुन्होंने विषयका स्पष्टीकरण किया। अुन्होंने बताया कि समस्या कितनी गम्भीर है, और लोगोंसे अिस सवालके हलमें धार्मिक अुत्साहसे जुट जानेके लिअे कहा। अिस विषय पर सरकार और जनता दोनोंको मिलकर काम करना चाहिये। लोगोंमें अुत्साहका अभाव है। समाजका काम है कि वह अुनमें यह अुत्साह भरे। श्री पाटीलने सरकारकी कठिनाअियोंका ब्यौरा बताया और समाजसे अनुरोध किया कि वह लोगोंकी कर्तव्यबुद्धि जगाकर अुनकी शक्ति अिस काममें लगाये।

शान्तिसेना, आर्थिक समानता, हरिजन-सेवा, नयी तालीम, नारी-आन्दोलन, नीतिमय वातावरण निर्माण करनेकी आवश्यकता आदि विषयों पर भी काफी चर्चा हुअी। प्रभावशाली वक्ताओं और दूसरे सदस्योंने अपने-अपने निश्चित कम समयमें ही अिन विषयों पर बोद्धप्रद विचार प्रगट किये।

सर्वोदय समाजका यह दावा नहीं कि वह जिन सवालोंको लेकर लोगोंके मन बेचैन हैं अुनके पूरे तैयार हल दे सकेगा। अुसके सदस्य सत्संगकी अिच्छासे अिकट्ठे होते हैं, अेक साथ सोचते हैं और अपने मनकी बात प्रगट करते हैं। हरअेक सदस्य वहांसे अपनी अलग छाप लेकर जा सकता है, और सम्मेलनसे अुसने अपने लिअे जो प्रकाश पाया हो अुसके अुजालेमें अपने अंतःकरणके आदेश पर चलनेके लिअे वह स्वतंत्र है।

अिस संक्षिप्त विवरणमें विविध वक्ताओंकी बातका ठीक मूल्यांकन करना सम्भव नहीं है। अुपसंहारमें अैसा कह सकते हैं कि जहां विनोबाने हमारी वर्तमान कठिनाअियोंका दीर्घकालिक अहिंसक अुपाय बताया, वहां श्री शंकरराव देवने अपने भाषणमें रचनात्मक कार्यकर्ताओंका लोकसेवक संघ निर्माण करनेकी सलाह दी, ताकि वे आ रहे चुनावोंमें मतदाताओंको गांधीवादी दृष्टिकोणके अनुसार प्रभावित कर सकें।

जवाहरलाल नेहरू

श्री जवाहरलाल नेहरूने सम्मेलनको संदेश भेजा था और आशा प्रगट की थी कि सर्वोदय समाज दुनियामें घिर रहे अंधेरेमें रोशनीकी तलाशमें हमारी मदद करेगा। जवाहरलाल दुनियाके राजनेताओंमें अहिंसाके सबसे बड़े अुपासक हैं। विनोबाने अपने अेक प्रार्थना-प्रवचनमें अिस संदेशका अुल्लेख किया और खुद भी अैसे ही भाव प्रगट किये।

क्या सर्वोदय समाजके सदस्योंसे हम यह आशा करें कि वे समयकी चुनौती स्वीकार करेंगे, अपना दृढ़ नैतिक संघटन तैयार करेंगे और देशमें छाये हुअे अंधकारको दूर करनेका साधन बनेंगे?

नागपुर, १६-४-'५१ ह० कृ० मोहनी

(अंग्रेजीसे)

अपील

कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने सरदार वल्लभभाअी पटेलकी यादगारमें अेक राष्ट्रीय स्मारक निधि अिकट्ठा करनेका प्रस्ताव किया है। अिस निधिमें जो रुपया जमा होगा वह मुख्यतः गांवोंकी सड़कों, कुओं और गांवके लिअे पानीके दूसरे साधनों, गांवके स्कूलके मकान और दूसरे अिसी तरहके कामों पर खर्च होगा। चंदेकी १५ प्रतिशत रकम केन्द्रीय निधिके लिअे रखी जायगी और बाकी रकम अुसी प्रांतमें, जहां वह जमा की गअी है, अूपर बताये हुअे अुद्देश्योंके लिअे काममें लाअी जायगी।

हम हरअेक गरीब-अमीरसे अपील करते हैं कि वे अिस निधिके लिअे अपनी शक्ति अनुसार चंदा दे। यह स्मारक हमारे महान और प्रिय नेताकी यादगार कायम रखेगा और देशके स्त्री-पुरुषोंको अुनकी सेवा, त्याग और गरीबोंके प्रति प्रेमकी याद दिलाता रहेगा। अिन्हीं गुणोंकी वजहसे हमें सरदार वल्लभभाअी पटेल अितने प्यारे थे।

नअी दिल्ली, ८ अप्रैल, १९५१

पुरुषोत्तमदास टंडन
जवाहरलाल नेहरू
अबुल कलाम आजाद
च० राजगोपालाचारी
गोविंदवल्लभ पन्त
गोविंददास
भाअूसाहब हीरे
अतुल्य घोष
प्रतापसिंह
गोकुललाल असावा
सिद्धनाथ शर्मा
जगजीवनराम
लक्ष्मीनारायण सुधांशु
सदोबा पाटील
मोहनलाल गौतम
काला वेंकटराव

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
सवाल-जवाब	कि० घ० मशरूवाला	६५
विद्यार्थी किस ओर?	मगनभाअी देसाअी	६६
शिवरामपल्लीका वृत्तांत	सुरेश रामभाअी	६७
पंचविध कार्यक्रम	कि० घ० मशरूवाला	६८
आबूरोडका दंगा	कि० घ० मशरूवाला	६९
बार-बार लगाये जानेवाले टीके	सोराबजी मिस्त्री	७०
शिवरामपल्लीकी प्रेरणामूर्तियां	ह० कृ० मोहनी	७०
अपील	पुरुषोत्तमदास टंडन आदि	७२
टिप्पणियां:		
बालासाहब पंत	कि० घ० म०	६५
बीजके मालिक	कि० घ० म०	६६
गूजरात विद्यापीठके नये कुलपति	म० देसाअी	६६